महर्षि काकभुशुंडि द्वारा लिखित भविष्यवाणी

मद्रास नगर रायपेट स्थित कौमार नाड़ी ज्योतिषालय के काकभुशुंडि औत 'काकनाड़ी' नामक संहिता में लिखा हुआ श्री प्रभु रामलाल जी महाराज का जातक फल ।

जन्म कुण्डली श्री योग योगेश्वर महाप्रभु पं० रामलाल जी महाराज

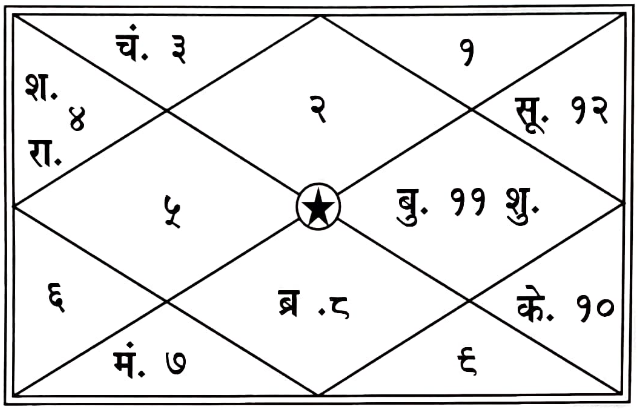

१. महर्षि श्री काकभुशुंडि कहते हैं कि अंड पिंड ब्रह्माण्डों को गर्भ में धारण करने वाली हे देवी ! एक महापुरुष का जातक फल मैं कह रहा हूँ । वृषभ लग्न है, द्वितीय भाव में चन्द्र है, कर्काटक में शनि राहु है, तुला में कुज है, वृश्चिक में वृहस्पति है, मीन में रवि है । मकर में केतु है । कुम्भ में बुध व शुक्र है । इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जन्म है ।

२. जगत की रक्षा के लिये अवतार लेने वाले महापुरुष हैं । जन्मभूमि अमृतसर (पंजाब) है । पूर्व पश्चिम बीथी है, उत्तराभिमुख सिंह द्वार का गृह है । पंचम गर्भ से जन्म है ।

३. जीवों को लोक-परलोक का ऐश्वर्य देने में समर्थ महाप्रभु हैं । अष्ट सिद्धियों के स्वामी हैं। सभी प्रकार की सिद्धिशक्तियों के अधिपति हैं । सांसारिक जीवों के प्रारब्ध को अपने ऊपर लेकर तथा भुगतकर उनको भी अपनी पदवी दे देने में सहायक महापुरुष हैं । यह विषय आगामी भागों में विस्तृत वर्णन करेंगे ।

४. आपका नाम श्री रामलाल है । पैतृक सम्पत्ति अधिक नहीं । समस्त विश्व को ऐश्वर्य देने में समर्थ प्रभु को पैतृक वैभव से क्या प्रयोजन है । पैतृक ऐश्वर्य अधिक रहने से इनको प्रयोजन भी क्या ?

५. पन्द्रह वर्ष की आयु होने पर विवाह होगा । पत्नी के बालकौर और सुभद्रा ये दो नाम हैं । माता-पिता के अनुरोध से ही यह विवाह होगा, फिर भी छिलके के साथ रहकर इमली की भाँति

निर्लेप ही रहेंगे । इस प्रकार भी थोड़ा समय व्यतीत करके अन्य देशों की ओर प्रस्थान करेंगे । उस अल्पकाल में भी सन्तानोत्पत्ति की ओर ध्यान न होगा ।

६. पिताजी का नाम श्री गण्डाराम है। आपकी बीस वर्ष की आयु के भीतर पिता का स्वर्गवास है। तीस वर्ष की आयु के भीतर माता का स्वर्गारोहण होगा, माताजी का नाम श्रीमती भागवंती है।

७. पिता के देहावसान के पश्चात् गृह त्याग कर तथा दूरस्थ देशों में जाकर बड़ों का अनुग्रह प्राप्त कर ज्ञान ज्योति अभेद व्यापक स्वरूप के दर्शन प्राप्त होंगे ।

८. ईश्वर कृपा अधिक रहेगी । बड़े-बड़े अनुभवी सिद्धों को भी होने वाले संदेहों को निवृत्त करने की असाधारण योग्यता को प्राप्त होंगे। ऐसी महान योग्यता बीस वर्ष की आयु के भीतर ही प्राप्त होगी ।

९. ऐसी महान योग्यता के साथ अनेक स्थानों में भ्रमण करेंगे । तीस वर्ष की आयु होने पर सकल सिद्धियाँ प्रकट होंगी । ज्ञानोपदेश करते हुए अनेक स्थानों में पदार्पण करेंगे ।

१०. अन्य जीवों को ज्ञानोपदेश द्वारा औतार्थ करने वाले गुरुओं के भी गुरु होकर उनकी योग्यतानुसार गुरुशक्ति प्रदान करते रहेंगे । सृष्टि स्थिति आदिक महाशक्ति सम्पन्न हैं । मुँह मांगा वरदान देने में भी पूर्ण समर्थ हैं ।

११. ये महापुरुष जगत की आधारभूत महाशक्ति के अवतार हैं । इनका चरित्र अपार है ।

१२. सदा सर्वदा निर्विकल्प में स्थित रहते हुए इक्यावन वर्ष की आयु में भौतिक शरीर का त्याग कर द्वितीय तन धारण करके मेरु गिरि के स्वर्ण शिखर पर रहकर इससे भी अधिक उन्नत स्थिति प्राप्त कर फिर दूसरा शरीर धारण कर कल्पान्त तक इसी स्थिति में विराजेंगे । ऐसी उत्तम स्थिति इस महापुरुष में नित्य रूप में रहेगी ।

दूसरा भाग

१. इड़ा पिंगला मध्यस्थ परमानंद पीठ में रहने वाले कृपासागर सर्वव्यापक अथवा सर्वजगत के रूप में प्रकट होने वाले उत्तम भक्तों के मनसरोज में उपस्थित ज्योतिरूप आदि अंत रहित परमेश्वर की प्रार्थना कर यथार्थ नित्य में सर्वदा स्थित एक महापुरुष के जातक फल में द्वितीय भाग कथन करता हूँ ।

२. इस प्रकार की ग्रहस्थिति में सर्वाधारी नामक वर्ष में चैत्र शुक्ला नवमी गुरुवार में पुनर्वसु नक्षत्र युक्त वृषभ लग्न सूर्योदय के अनन्तर ६ घ० ५६ पः पर इनका जन्म होगा । इनका शुभ नाम रामलाल है । पिताजी का नाम गण्डाराम है तथा माताजी का नाम भागवन्ती है ।

३. इनके जन्म के पश्चात् अढ़ाई वर्ष के भीतर अपने तथा जननी के तन में साधारण अस्वस्थता के पश्चात् स्वस्थ होकर परिवार में सुख का संचार होगा । इनके कारण माता-पिता का नाम यावत चन्द्र दिवाकरौ प्रसिद्ध होगा । इससे अधिक माता-पिता का और क्या सौभाग्य होगा ।

४. पश्चात् के अढ़ाई वर्ष में समझ न आने वाले बालेन्दु की भांति दिन-प्रतिदिन ओजपूर्ण होंगे । उस समय कौन जान सकेगा कि इनका भविष्य कितना महान है । विद्याध्ययन पाँच वर्ष की आयु में होगा। सौदर-वृद्धि के साथ कुटुम्ब सौख्य भी उन्नत होगा ।

५. पश्चात् के अढ़ाई वर्ष में जैसे मधु की ओर मधुप की प्रवृत्ति सहज है उसी प्रकार सत्य स्वरूप की ओर इनकी वृत्ति इस अल्प आयु में ही प्रविष्ट होगी तथा भविष्य के लिए आवश्यक अनुकूल प्रवृत्ति के साथ अनुभव आरम्भ होगा ।

६. ऐसे महापुरूष के पारिवारिक विषय कथन करने का क्या प्रयोजन है? दस वर्ष की आयु के भीतर जैसे माता पार्वती ने दक्षिण के ज्ञान सम्बन्ध मूर्ति नामक महापुरुष को अमृत पिलाकर कृतार्थ किया था,उसी प्रकार इनको भी दैवी कृपा प्राप्त होकर तत्व ज्ञानार्जन में इनकी बुद्धि प्रवृत्त होगी।

७. छोटी आयु से ही माता-पिता के आधीन होकर स्वतंत्र व्यक्ति की भाँति रहेंगे ।

८. पश्चात् के अढ़ाई वर्ष में स्वयम् भगवान ही गुरु रूप में आकर उपदेश देंगे । तब से वैराग्य, संशय-निवृत्ति अनुभव प्राप्त होंगे । ऐसी अवस्था माता-पिता को कष्टप्रद होगी । इस कारण बाद के अढ़ाई वर्ष में माता-पिता किसी प्रकार विवाह करके इनको संसार बन्धन लगाते हैं । धर्मपत्नी के बालकौर और सुभद्रा दो नाम हैं । विवाह के बाद भी प्रथम की भांति गुरु उपदेश के समय जो कुछ भगवान ने आज्ञा दी थी उस आज्ञा के अनुसार योग प्रवृत्ति तथा तपस्या में ही लगे रहेंगे ।

९. धर्मपत्नी की उपस्थिति में भी इमली जैसे छिलके साथ रहती हुई भी पृथक हैं । इस प्रकार निर्लेप होकर सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे । इस कारण माता-पिता के हृदय का क्लेश बढ़कर उनके शरीर का स्वास्थ्य न्यून होने लगेगा । इतने में पिता का स्वर्गवास होगा । शुभाशुभों के होते हुए भी बड़ों का सत्संग तथा अनेक पुण्य स्थानों की यात्रा होगी।

१०. पीछे के अढ़ाई वर्ष में तपः स्थान में अधिकारी महापुरुषों की सन्निधी प्राप्त होगी । अनेक मनुष्य इनके आश्रित होकर सेवा करने लगेंगे । अधिक जीवों को ज्ञानोपदेश करते हुए अनेक स्थानों में भ्रमण करेंगे ।

११. पश्चात् के अढ़ाई वर्ष तक इनकी ख्याति अधिक होगी । गृहस्थ के सम्बन्ध को त्यागकर विशेष वैराग्य के साथ भ्रमण करेंगे ।

१२. फिर अढ़ाई वर्ष में माता का तन अस्वस्थ रहेगा । तपस्या में विशेष सिद्धि प्राप्त होगी । उस सिद्धि के प्रभाव से अपने को छोड़ दूसरों को भी महान लाभ होगा । इतने में माताजी स्वर्ग निवास करेंगी ।

१३. माता के स्वर्गारोहण के पश्चात् सन्मार्ग में विशेष अनुकूलता बढ़ेगी । भूमि तथा जल में समाधि का अनुभव करेंगे । सत्कीर्ति विशेष बढ़ेगी ।

१४. फिर अढ़ाई वर्ष में इस प्रकार अभ्यास करके अष्टसिद्धियों को प्राप्त होकर ईश्वर साक्षात्कार को प्राप्त करेंगे ।

१५. महिमा का विस्तार होगा । एक ही समय में अनेक स्थानों पर प्रकट होने की शक्ति को प्राप्त होंगे ।

१६. फिर से अढ़ाई वर्षों में इस प्रकार की सिद्धियाँ विशेष रूप से बढ़ेंगी । सर्वभूतों में आत्मा को तथा आत्मा में सर्वभूतों को देखेंगे । सर्वव्यापक होकर रहने की सामर्थ्य को प्राप्त होंगे । आहार व निद्रा के बिना अजगर की भांति आत्माराम हो प्रकाशित होंगे ।

१७. बाद के अढ़ाई वर्ष में प्रथम शरीर छोड़कर द्वितीय नूतन योगतन कल्पित करके धारण करेंगे । ऐसी महासिद्धि में निपुणता प्राप्त होगी ।

१८. फिर अढ़ाई वर्ष में अयोनी संभव शरीर में प्रविष्ट होंगे ।

१९. इस प्रकार योग शरीर से अनेक स्थानों में भ्रमण करेंगे ।

२०. पीछे के अढ़ाई वर्ष में एक शरीर को बहुत बार छोड़कर स्वेच्छा से बहुत से शरीरों में प्रवेश कर लौटने की महासिद्धि से युक्त हो प्रकाशित रहेंगे ।

२१. इस प्रकार लोक पूज्य होकर फिर से अढ़ाई वर्ष में कायव्यूह नामक महासिद्धि से युक्त हो रहेंगे । एक शरीर से अनन्त शरीरों को तथा अनेक शरीरों से एक शरीर को स्वेच्छा से धारण करते रहेंगे। अदृश्यत्व सिद्धि से युक्त होंगे। छुरी से भी न खण्डित होने वाला शरीर होगा।

२२. पश्चात् के अढ़ाई वर्ष तक इस प्रकार की दिव्य शक्तियाँ तथा योग सिद्धियाँ लोक में प्रकट करेंगे ।

२३. इक्यावन वर्ष में शरीर त्याग की लीला संसार को दिखाकर द्वितीय दिव्य शरीर से हिमालय पर्वत तथा अन्य स्थानों में भ्रमण करते रहेंगे । परमेश्वर में व इनमें कोई भेद नहीं है ।

२४. इसके पश्चात् नवग्रह इन पर अपना प्रभाव बिल्कुल नहीं दिखा सकेंगे । श्रद्धा भक्ति से अपना ध्यान करने वालों पर सदैव कृपा दृष्टि रखेंगे । इससे अधिक इस महापुरुष के प्रति मैं क्या कह सकता हूँ ?

हे माता पार्वती ! इस प्रकार काकभुशुंडिजी कहते हैं । जब तक सूर्य चन्द्र हैं तब तक यह महापुरुष इसी प्रकार कल्पान्त तक प्रकाशित रहेंगे ।

❀ ❀ ❀